International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 03, July - September, 2020, pp.401-404

अलीबख्शी लोकनाट्य ख्याल परम्परा में समाहित तत्व आध्यात्मिकता एवं सामाजिकता

डॉ. नीलम सैन*

प्रस्तावना

राजस्थान की लोकनाट्य ख्याल परम्परा में अलीबख्शी ख्याल अपना विशेष महत्व रखते हैं। राजस्थान की रंग–रंगीली धरती पर लोकनाट्य ख्यालों की अविरल धारा प्रवाहमान है जो मानव मन को सहज ही अपनी और आकर्षित करती है। राजस्थान में अलीबख्शी नाट्य ख्यालों की परम्परा भी अनूठी और बेजोड़ है जिसे लोकनाट्यकार अलीबख्श ने अपनी साधना व कला अभ्यास से उच्च शिखर पर विराजमान किया है अलीबख्शी ख्याल मानव जीवन में सामाजिक व आध्यात्मिक तत्वों का भी प्रदर्शन करते हैं। मनोरंजन के साथ ही ज्ञान व कौशल का प्रदर्शन करना इन लोकनाट्य ख्यालों की विशेषता है। अलीबख्श ने अपने ख्यालों में आध्यात्मिक तत्वों का भरपूर उपयोग किया है और ईश्वर प्राप्ति को ही जीवन का परम उद्देश्य माना है और इसी प्रकार, सामाजिक भाईचारा व अनुशासन को भी अपने नाट्य ख्यालों में स्थान दिया है और इन्हीं अलीबख्शी लोकनाट्य के तत्वों को प्रकट करने के लिए यह विश्लेषणात्मक लेखन प्रस्तुत है।

अलीबख़्शी नाट्य ख्याल आध्यात्मिक तत्व

अलीबख़्शी नाट्य ख्याल आध्यात्मिकता के उस उच्च धरातल पर विराजमान है जहाँ पर धर्म–देवी–देवता, पीर पैगम्बर आदि का भेदभाव समाप्त हो जाता है। व्यक्ति भगवत प्राप्ति की और बढ़कर परम आनंद की प्राप्ति करता है। अलीबख़्शी का मानना था कि संगीत के द्वारा व्यक्ति निर्बाध रूप से भावना जन्य आनंद की प्राप्ति कर सकता है ब्रह्मानंद अर्थात् महारस की प्राप्ति कर सकता है। संगीत की साधना करने के पश्चात् मनुष्य की वृति परिवर्तित होती है और अलीबख्श उस वृत्ति को जानते थे इसलिए उन्होंने अपने नाट्य ख्यालों से आम–जन को जोड़ा सभी लोगों ने अलीबख्श की इस भक्ति संगीत की पावन–धारा में तन–मन से हर्षित होकर स्नान किया एवं अपने आप को कृत–कृत्य कर लिया अलीबख़्श ने आध्यात्मिक चरित्र–निर्माण की अभिलाषा शांत करने का सफल प्रयास किया है। अलीबख़्श ने अपनी रचनाओं में हिन्दु–मुस्लिम समुदायों से सम्बन्धित लोक–कथाओं का समावेश किया है और उन लोककथाओं को लोकनाट्य में रूपान्तरित कर आम–जनजीवन में आध्यात्मिकता का पुट दिया है।

अलीबख़्शी ख्यालों के हिन्दु–मुसलमान दोनों मुरीद थे। अलीबख़्श रात–रातभर घंटेश्वर मंदिर रेवाड़ी में श्री कृष्णलीला व दूसरे ख्यालों का मंचन करते थे अलीबख्श जब भी ख्याल आरंभ करते तब ईश्वर का ध्यान लगाते थे। सभी हिन्दु मुस्लिम देवी–देवताओं ओलिया पीरों को खुश करने के लिए ख्याल गाते थे। वे ''श्री कृष्णलीला'' का आरंभ इस प्रकार करते थे

''तू ही निरंजन रूप है, तेरी माया अपरम्पार।
तेरी माया का रचा सभी जगत विस्तार।।''[1]

अलीबख़्श जब भी नाट्य ख्याल प्रारंभ करते थे सर्वप्रथम मंगलाचरण होता था जिसमें वह ईश्वर की स्तुति करते थे उदाहरणार्थ :

---

6 सहायक प्रोफेसर, संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

ऐसो हनुमान म्हारो प्यारो हनुमान, जननी की
सुध लाये, लाये ऐसो हनुमान।। टेक
हनुमान ऐसो बलकारी जति मर्द की खान।
सौ योजन गयो कूद समुद्र निकल गयो ज्यो बान।
म्हारो ऐसो हनुमान सीया की सुध लाये, लाये ऐसो हनुमान''[2]

उपरोक्त पंक्तियों में अलीबख़्श ने भगवान हनुमान की आराधना की है जो कि अलीबख्श के आध्यात्मिक पक्ष को प्रकट करती है। अलीबख़्श ने नाट्य ख्यालों में सचेत होकर प्रभु भक्ति करने में ही जीवन की सार्थकता बताई है।

क्या करी कमाई, उम्र गंवाई, चोला फटो सियो ना।
कहे अलीबख़्श, इस दुनिया में, कभी हर को नाम लियो ना।।
अलीबख़्श तेरी उमर गई है घट, सोयो बहुत ले ले करवट।
अरे मन मूरख, अजहूँ तो चेत, दिन–रैन काट रघुपत रट–रट।।
काम, क्रोध, लोभ त्यागो, दूर दृष्ट दुनिया से भागो।
कहे अलीबख्श अब भज भगवत को, क्यों नाहक उमर गंवावत हो।।''[3]

उपरोक्त पंक्तियों में अलीबख्श अपने नाट्य पद्य के माध्यम से आध्यात्मिकता का संदेश दे रहे हैं और कह रहे हैं कि वास्तविक कमाई भगवत नाम स्मरण की है इसी भगवत नाम के सहारे से ही मनुष्य यह जीवन रूपी नैया पार कर सकता है मनुष्य को काम, क्रोध, लोभ का त्याग कर ईश्वर की सच्चे मन से आराधना करनी चाहिए। मनुष्य इन सांसारिक बंधनों में उलझकर अपने एक मात्र उद्देश्य (ईश्वर की प्राप्ति) को भूल जाता है और इस जीवन चक्र में उलझ जाता है।

अलीबख़्श ने अपने नाट्य ख्यालों के माध्यम से अध्यात्म की तरफ आगे बढ़ने की कोशिश की है। अलीबख़्श का नाट्य ख्याल ''कृष्णलीला'' आध्यात्मिकता का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है। अलीबख़्श ने भगवद्भक्ति के इस उच्च आदर्श को ही अपने जीवन का ध्येय बनाकर अलीबख़्शी ख्यालों की रचना की और इस भक्ति और समदृष्टि ने ही अलीबख़्शी नाट्य ख्यालों में वह आलोकिक शक्ति भर दी जो समाज के लिए आध्यात्मिकता के क्षेत्र में अनुकरणीय बन गई। अलीबख्शी नाट्य ख्यालों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि लोकरंजन के माध्यम से लोकमंगलकारी भक्ति की स्त्रोतस्विनी प्रवाहित करके लोकमानस को उसमें अवगाहन करने का सुअवसर प्रदान किया है। इन नाट्य ख्यालों द्वारा आध्यात्म का पथ दिखाई देता है। ये नाट्य ख्याल आम–जन को आध्यात्मिकता का पाठ पढ़ाते हैं। वर्तमान समय में अलीबख्श की ख्याल गायकी को गाने वाले कलाकार व आमजन इन नाट्य ख्यालों को गाकर व सुनकर ईश्वर की भक्ति में डूब जाते हैं। क्योंकि इन नाट्य ख्यालों का प्रारंभ व समापन ईश्वर की स्तुति के साथ होता है। इन नाट्य ख्यालों का संगीत मन को आध्यात्मिकता के सरोवर में डूबा देता है जिसमें आम–जन स्वयं ही भगवान के चरणों में आ जाता है। लोकनाट्यकार **ओमप्रकाश जांगिड़** ने अलीबख्श के 70 भजनों का संकलन किया है जो आमजन के लिए आध्यात्मिकता का मार्ग बतलाते है। **ओमप्रकाश जांगिड़** कहते हैं कि मैंने अलीबख्श संगीत को अपने दादा धनीराम से सीखा, दादाजी अलीबख्श की मण्डली में नाच गाने का काम करते थे वहीं से मुझे गाने का शौक हो गया। मैंने तलाश कर अलीबख्श के करीब 70 भजनों का संकलन किया है।''[4]

अलीबख्शी नाट्य ख्याल सामाजिक तत्व

अलीबख्शी नाट्य ख्याल सामाजिक प्रेरणा का निर्वाह करते हुऐ समाज के विचार तथा आदर्श आदि को चित्रित करने की सामर्थ्य रखते हैं। इन ख्यालों में सामुदायिक जीवन की मर्यादा के साथ सजीवता, सजगता, आस्था, विश्वास, सरलता तथा सत्यनिष्ठा निहित है। वस्तुतः आज हम एक ऐसे चौराहे पर खड़े हैं जहाँ एक और साम्प्रदायिकता का भयानक दानव है और दूसरी और भौतिकता की चकाचौंध और भ्रष्टाचार का बोलबाला

है। वहीं अलीबख़्शी ख्यालों में लोक–सांस्कृतिक जीवन मूल्य समाहित है। जो मानव के लिए कल्याणकारी है। अलीबख्श ने नाट्य और संगीत के माध्यम से समाज को परिचित कराकर मानवीय गुणों से समन्वित राह पर चलने की सच्ची प्रेरणा दी है। अलीबख़्शी नाट्य ख्यालों में हमारी भारतीय संस्कृति की धार्मिक, ऐतिहासिक व सामाजिक सभी विधाएं पूर्णरूपेण विद्यमान है। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के आदर्श को सम्मुख रखकर लोगों को सुगठित कर उनमें सौहार्द्र और सहयोग का भाव जगाकर उन्हें एक उन्नत समाज की रचना में सहयोग देने के लिए तत्पर करना अलीबख़्शी नाट्य ख्यालों का उद्देश्य है। सामाजिक एवं शाश्वत समस्याओं का निराकरण करने के लिए ये नाट्य ख्याल बखूबी भूमिका निभाते हैं। अलीबख़्श की समस्त नाट्य कृतियां उच्चादर्श, मर्यादा, आस्था और उदारता के आधार स्तम्भों पर निर्मित हुई है।

अलीबख्शी नाट्य ख्याल साम्प्रदायिक सद्भाव के बड़े संरक्षक और प्रतीक है। अलीबख्शी नाट्य ख्याल आज की बदलती सामाजिक परिस्थितियों में साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए कहीं अधिक प्रासंगिक दिखाई देते हैं। धर्म निरपेक्षता अलीबख्श ख्यालों का विशेष प्रदाय है। उन्होंने राम को संबोधित कर हिन्दु–मुस्लिम धर्मांधता पर आघात किया है – उदाहरणार्थ–

मैं कहा जाऊँ राम, घर को गैलो ना पावे।
वेद पुरान, कुरान अंग्रेजी एक न एक मिहावे।।
ये चारो आपस में झगड़ते न कोई न्याव चुकावे।
पीर पादरी को नही पाऊँ, नाहक मगज पचावे।।
अंध लोक के अंधे बासी भूले को और भूलावे।
मैं गहलो गैला में ठाड़ों ना कोई गैल बतावै।।
अबीबख़्श ऐसा गुरू मिलियो, जो सीधी गैल बतावै।
अलीबख़्श बिना सत्संग के हाथ कछु ना आवे।''[5]

अलीबख्श अपने नाट्य ख्यालों में पीर–ओलियाओं को भी प्रणाम किये बिना रह सके, चूंकि अलीबख्श स्वयं मुसलमान थे फिर भी वे कृष्ण के अनन्य भक्त थे। इसी कारण से अलीबख्श ने रेवाड़ी में निहालदे ख्याल का मंचन करते वक्त प्रसिद्ध घंटेश्वर महादेव की आराधना के साथ सैयद साहब की भी प्रार्थना की है जो इस प्रकार है –

दोहा :

उठा सोबता, जाग।, राग मैं गाकर तुम्हे सुनाऊँ।
घन्टेश्वर घट में बसो शिवशंकर शीश नवाऊँ।।
हिन्दु के हर भगत, मुसलमान के पीर मनाऊँ।
अलीबख्श दोनों दीनो के दंगल में गुण गाऊँ।।

उदाहरणार्थ

माँझ :

सैयद बड़े जमाल है और सैयद महमूद।
हाजिर भक्ति में सदा दस्त बाँध मौजूद।।
दस्त बाँध मौजूद पीर बांकै बारह हजारी।
घन्टेश्वर घट में बसा दो चित से चिन्ता सारीं।''[6]

उपरोक्त पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि अलीबख्श के ख्यालों के गायक–दर्शक दोनों मजहबों के लोग होते थे तथा अलीबख्श की रचनाएँ हिन्दु–मुस्लिम एकता का भाव लिए हुए थी। हिन्दुओं के देवी–देवताओं और मुसलमानों के पीर पैगम्बरों के प्रति अलीबख्श के मन में श्रद्धा थी इस कारण ये मंच पर भी सस्वर उद्घोष करते थे।

हिन्दु के हर भजूँ, मुसलमान के पीर मनाऊँ।
अलीबख्श दोनों दीनों को, दंगल में गुण गाऊँ।।"[7]

उपरोक्त पंक्तियों में यह स्पष्ट होता है कि अलीबख्श ने हिन्दु–मुस्लिम एकता को बनाये रखने में अतुलनीय योगदान दिया है तथा जातिगत आपसी भेदभाव मिटाकर राष्ट्रीय एकता व समानता का भाव जनमानस को प्रदान किया है।

वर्तमान में अलीबख्श की रचनाओं के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन आया है तथा समाज की तस्वीर बदली है। इन ख्यालों में अलीबख्श ने बताया है कि परायी वस्तु पर दृष्टि नहीं रखनी चाहिए क्योंकि दूसरे का अधिकार हड़पने पर उसका अन्त भी बुरा होता है इसलिए विद्वेष रहित समाज के लिए यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने भाग को पाकर ही संतुष्ट हो जायें, अलीबख्श की दृष्टि में लोभ के वशीभूत होकर अनैतिक कर्म करना ऐसा कृत्य है जो व्यक्ति, समाज दोनों के लिए घातक है। इस प्रकार इन नाट्य ख्यालों द्वारा हिंसा का विरोध भी किया गया है। वर्तमान परिदृश्य में अलीबख्शी नाट्य ख्यालों द्वारा समाज का नव–निर्माण हो रहा है चूंकि आज का युग भौतिक साधनों का युग है जिसमें मानव तनाव एवं कुंठाओं से घिरा हुआ है वह इन लोकनाट्यों को देखकर–सुनकर आनन्द प्राप्त करता है। अलीबख्शी नाट्य ख्यालों में रहन–सहन, बोली व्यवहार सभी अपने प्रदेश की चीज होने से व्यक्ति अपनापन महसूस करता है। इस प्रकार आपस में मेलजोल एकता, प्रेम, भाईचारे की भावना बढ़ाने का माध्यम तथा समाज का सुनियोजित विकास करने में अलीबख्शी नाट्य ख्याल महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

अतः निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि अलीबख्शी लोकनाट्यों में सामाजिक एवम् आध्यात्मिक तत्व कूट–कूट कर भरे हुए हैं जो मानव मात्र के पथ–प्रदर्शक हैं अलीबख्श ने मानव जीवन का परम उद्देश्य भगवत प्राप्ति बताया है। साथ ही समाज में आपसी प्रेम व सौहार्द्र का वातावरण निर्मित हो और अनैतिकता का अन्त हो यह उद्देश्य प्रकट किया है। अलीबबख्श के सांगीतिक पद्यों में शान्ति की अविरल–धारा बह रही है। कल्पनाशीलता अनुशासनात्मकता, स्वरों से सराबोर पद्य आज भी मानव को सुनियोजित व विकास पथ पर अग्रसर करते हैं। हिन्दु–मुस्लिम एकता पर बल दिया है जिसकी वर्तमान परिदृश्य में सबसे ज्यादा आवश्यकता है। अतः समाज में शान्ति, सौहार्द्र, मनोरंजन का सुखद वातावरण प्रदान करने में अलीबख्श की नाट्य परम्परा सक्षम है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सलाम मेवात, सितम्बर (2012), अलवर, पृ.सं. 5
2. जाँगिड़, मा.मोहरसिंह, जाँगिड़, श्री ओमप्रकाश (2017), श्री कृष्ण भक्त संगीत सम्राट श्री अलीबख़्श, मुण्डावर (अलवर) राजस्थान के द्वारा रचित ख्याल एवं राग रागनी, प्रकाशक रामसिंह जाँगिड़, पृ.सं. 8
3. भारद्वाज, डॉ. रामकुमार, भारद्धाज डॉ. अनिता (1999), लोककवि एवं नाट्यकार अलीबख्श, मौलिक साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, पृ. सं. 176
4. अलवर पत्रिका (राजस्थान पत्रिका), गुरूवार 25.5.2017 अलवर, पृ.सं. 13
5. जाँगिड़, मा.मोहरसिंह, जांगिड़, श्री ओमप्रकाश (2017), श्री कृष्ण भक्त संगीत सम्राट श्री अलीबख़्श, मुण्डावर (अलवर) राजस्थान के द्वारा रचित ख्याल एवं राग रागनी, प्रकाशक रामसिंह जाँगिड़, पृ. सं. 4–5
6. सलाम मेवात, सितम्बर (2012), अलवर, पृ.सं. 5
7. भारद्वाज, डॉ. रामकुमार, भारद्धाज डॉ. अनिता (1999), लोककवि एवं नाट्यकार अलीबख्श, मौलिक साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, पृ. सं. 206.

❖◆❖